NEEV
2027
काव्य खंड
भारति, जय, विजयकरे !

Class - 9th | HINDI

By- अदिति मैम

Lecture - 04

पाठ सूची

01 भारति, जय, विजयकरे !

02 कविता का सार

03 काव्यांश line to line

04 शब्दार्थ

05 प्रश्न-अभ्यास

Aditi Ma'am
JOIN MY OFFICIAL TELEGRAM CHANNEL
@PWADITIPUROHITMAAM

HELLO CUTIES..!

कवि
लेखक परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1899 में बंगाल के महिषादल में हुआ। वे हिंदी साहित्य के प्रमुख छायावादी और क्रांतिकारी कवि थे। उन्होंने स्वाध्याय से संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेज़ी का ज्ञान प्राप्त किया तथा मुक्त छंद को लोकप्रिय बनाया। उनकी प्रमुख कृतियों में अनामिका, परिमल, गीतिका और कुकुरमुत्ता शामिल हैं। उनकी रचनाओं में प्रकृति, मानवता, विद्रोह, सामाजिक न्याय और करुणा का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। सन् 1961 में उनका निधन हुआ, लेकिन हिंदी साहित्य में उनका योगदान आज भी अमूल्य माना जाता है।

भारति, जय, विजयकरे !
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

'भारति, जय, विजयकरे!' कविता 'निराला' की देशप्रेम से ओत-प्रोत एक प्रेरणादायक रचना है। कविता के आरंभ में कवि 'भारति, जय, विजयकरे!' कहकर भारत की विजय और गौरव की कामना करता है। वह भारतभूमि को 'कनक-शस्य-कमलधरे!' कहकर संबोधित करता है, जो भारत की कृषि-समृद्धि और श्रम सौंदर्य को दर्शाता है।

कविता में भारत की प्राकृतिक सुंदरता का ऐसा चित्रण किया गया है मानो यह कोई देवी हो, जिसके चरणों को समुद्र अपने जल से धोता है। नदी, वन, पुष्प, हिमालय और गंगा जैसी प्राकृतिक संपदाएँ भारत के आभूषण के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। कवि भारत को एक चेतन सत्ता के रूप में देखता है, जिसकी दिशाओं में 'ओंकार' की गूंज हो रही है और जो अनेक तरह के स्वरों और विचारों से समृद्ध है।

काव्यांश

काव्यांश 1

भारति, जय, विजयकरे !
कनक-शस्य-कमलधरे !
लंका पदतल शतदल
गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु-अर्थ-भरे!

शब्दार्थ

भारति - सरस्वती, वाणी, वाणी की अधिष्ठात्री, भारतमाता;

जय, विजयकरे - विजय प्रदान करने वाली, सफलता देने वाली;

कनक - सोना, पलाश, चंपाः

शस्य - अन्न, फसल, खेती, धान्य, नई घास, कोमल तृण, सद्गुण;

कमलधरे - कमल धारण करने वाली:

लंका - श्रीलंका (भारत के दक्षिण का द्वीप देश);

पदतल - तलवा, चरणों के नीचे,

शब्दार्थ

शतदल - सौ पंखुड़ियों वाला कमलः

गर्जितोर्मि - गरजती तरंगें,बादलों का गर्जन,

सागर-जल-समुद्र का पानीः

शुचि - पवित्र, शुद्ध, निर्मल, साफ, श्वेत, उज्ज्वलः

चरण युगल-दोनों चरण, जोड़ा;

स्तव - प्रशंसा, स्तुति, स्तोत्रः

बहु-अर्थ- भरे - अनेक अर्थों से युक्त ।

काव्यांश 2

तरु-तृण-वन-लता वसन,
अंचल में खचित सुमन;
गंगा ज्योतिर्जल-कण
धवल धार हार गले ।

काव्यांश 2

मुकुट शुभ्र हिम-तुषार,
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख शतरव-मुखरे !

शब्दार्थ

तरु - वृक्ष, पेड़

तृण - तिनका, घास, खर-पात;

लता - बेल, वल्लरी;

वसन - वस्त्र, कपड़े, आवरण;

अंचल - आँचल, कोना;

खचित - जड़ा हुआ, अंकित,गुंथा हुआ ;

सुमन - फूल, पुष्प;

ज्योतिर्जल-कण - प्रकाशमय जल की बूँदें;

शब्दार्थ

धवल - सफेद, श्वेत, स्वच्छ, निर्मल, उज्ज्वल ;

धार - धारा, प्रवाह;

मुकुट - शीर्षाभिषण , सिर का आभूषण;

शुभ्र - अत्यंत सफेद, निर्मल, चमकीला;

हिम-तुषार - बर्फ की ओस, पाला, हिमकण (हिमालय का संकेत);

प्राण - जीवनशक्ति;

प्रणव - पवित्र शब्द;

ध्वनित - गूंजता हुआ ;

शब्दार्थ

दिशाएँ - चारों ओर के क्षेत्र;

शतमुख - अनेक मुख;

शतरक - सौ की संख्या में ध्वनि, शब्द, गुँजार;

मुखरे - गूँजता हुआ, बजता, शब्द करता हुआ, शोर करने वाला।

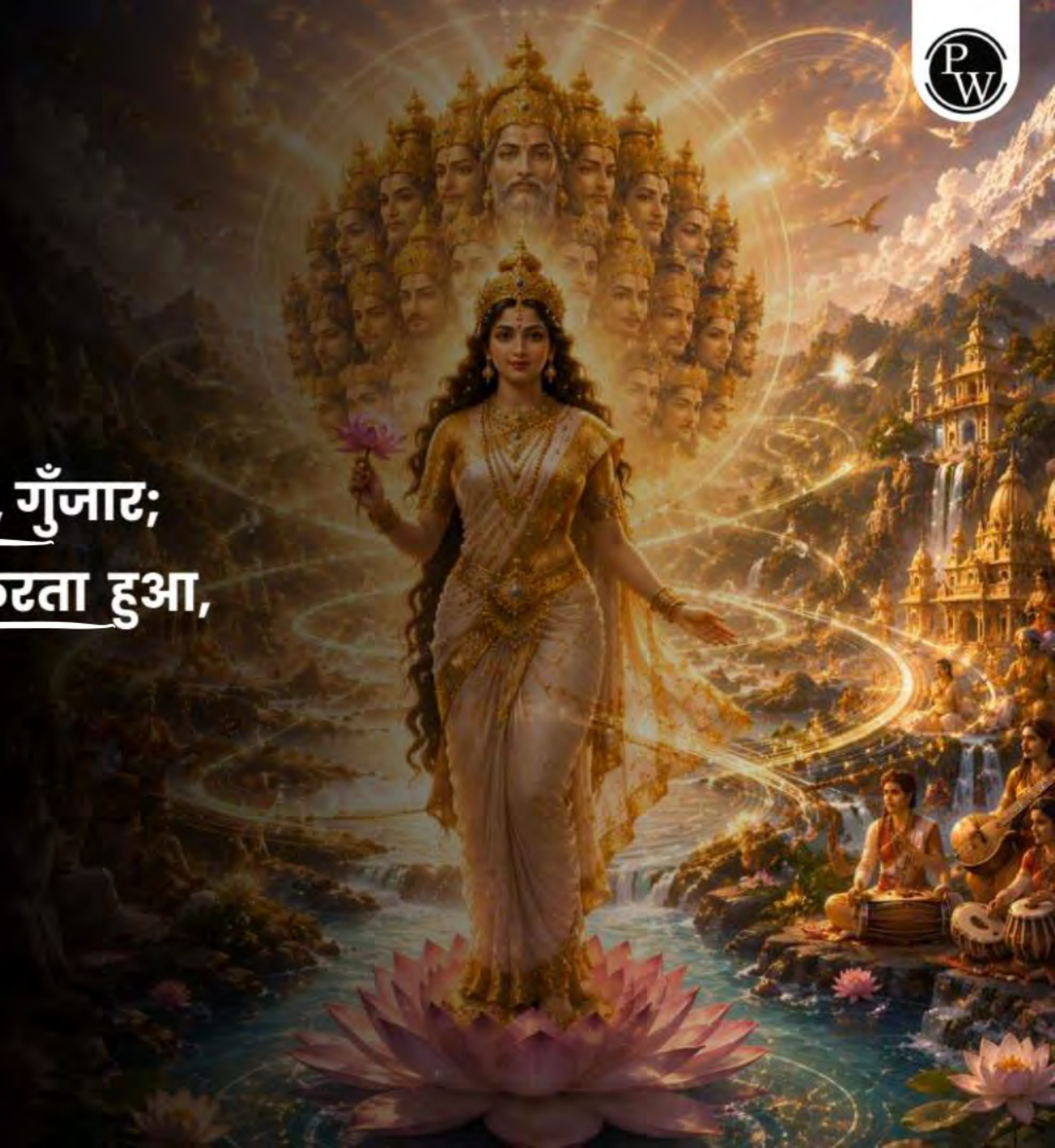

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'गंगा' में संकलित कविता 'भारति, जय, विजयकरे !' से लिया गया है। इसके रचयिता महान राष्ट्रवादी चेतना के कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत कविता **'भारति जय विजय करे'** के रचयिता सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हैं। इस कविता में भारत माता की महिमा, सौंदर्य और गौरव का वर्णन किया गया है तथा देश की प्राकृतिक और सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाया गया है।

व्याख्या : कवि भारत माता की स्तुति करते हुए कहते हैं कि हे भारत माता! आप हमें विजय दिलाने वाली हैं और सोने के समान चमकती हुई फसलों तथा कमलों से सजी हुई हैं।

आपके चरणों के नीचे लंका स्थित है और समुद्र की गरजती हुई लहरें आपके पवित्र चरणों को धोती हैं तथा अनेक अर्थों से भरी हुई आपकी स्तुति करती हैं।

आप वृक्षों, घास और लताओं को वस्त्र के रूप में धारण करती हैं और आपका आँचल सुंदर फूलों से सजा हुआ है। गंगा का चमकता हुआ जल आपके गले में सफेद हार के समान शोभा देता है। आपके सिर पर बर्फ के समान सफेद हिमालय मुकुट के रूप में विराजमान है और आपके प्राणों में 'ओंकार' की पवित्र ध्वनि गूंजती रहती है।

आपकी महिमा से सभी दिशाएँ गूँज उठती हैं और अनेक स्वर मिलकर आपकी महानता का गुणगान करते हैं।

कवि यहाँ यह भी दर्शाते हैं कि भारत माता केवल भौतिक रूप से ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी महान है। प्रकृति के प्रत्येक तत्व-नदियाँ, पर्वत, वन और सागर भारत की महिमा को और अधिक बढ़ाते हैं।

इस वर्णन से देश के प्रति गर्व श्रद्धा और सम्मान का भाव उत्पन्न होता है। कवि भारत को एक जीवंत, दिव्य और पवित्र स्वरूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे पाठक के मन में देशप्रेम की भावना प्रबल हो जाती है।

संस्कृतनिष्ठ हिन्दी

प्रश्न-अभ्यास

बहुविकल्पीय प्रश्न

Q. निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

"भारति, जय, विजयकरे" कविता में विशेष रूप से-

(क) भारत की भौगोलिक संरचना की प्रशस्ति की गई है।

(ख) भारत की सांस्कृतिक विविधता बताई गई है।

(ग) भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा की गई है।

(घ) भारत के खनिज पदार्थों के बारे में बताया गया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

Q. निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

"कनक शस्य कमल धरे" पंक्ति का भावार्थ है

(क) भारत की धन-धान्य संपन्नता

(ख) भारत की नदियों का सौंदर्य

(ग) भारत के लोक जीवन की सुंदरता

(घ) भारत की सैन्य शक्ति और औद्योगिक विकास

बहुविकल्पीय प्रश्न

Q. निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

समस्त विश्व में भारत के महत्व का उद्घोष करने वाली पंक्तियाँ हैं-

(क) गंगा ज्योतिर्जल-कण / धवल धार हार गले

(ख) गर्जितोर्मि सागर जल /धोता शुचि चरण युगल

(ग) भारति, जय, विजयकरे / कनक शस्य कमलधरे !

(घ) ध्वनित दिशाएँ उदार / शतमुख -शतरव-मुखरे !

बहुविकल्पीय प्रश्न

Q. निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

कविता की भाषा और शैली किस विशेषता से संपन्न है?

(क) सरल, बोल-चाल की भाषा

(ख) संस्कृतनिष्ठ और समासयुक्त

(ग) सरस और हास्य-व्यंग्यपूर्ण

(घ) संवादात्मक और विश्लेषणात्मक

बहुविकल्पीय प्रश्न

Q. निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

भारत के वस्त्रों में 'तरु-तृण-वन-लता' और गले में 'गंगा धारा' को चित्रित कर कवि किस प्रकार की चेतना का संदेश देते हैं?

(क) पर्यावरणीय और सांस्कृतिक

(ख) राष्ट्रीयता और देशप्रेम

(ग) ऐतिहासिक और भौगोलिक

(घ) सामाजिक और राजनीतिक

प्रश्न-अभ्यास

Q. नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए

कविता में कवि की किस भावना की अभिव्यक्ति मिलती है?

देश-प्रेम

कविता में कवि की भारत माता के प्रति गहरी श्रद्धा, प्रेम और गर्व की भावना व्यक्त होती है। वह भारत की शक्ति, सौंदर्य, समृद्धि और संस्कृति की महिमा को दर्शाता है।

प्रश्न-अभ्यास

Q. कविता में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किस प्रकार किया गया है? क्या आप मानते हैं कि प्रकृति का संरक्षण करना भी देशप्रेम का काम है? क्यों?

कविता में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन बड़े ही भव्य और दिव्य ढंग से किया गया है, जैसे वृक्ष, तृण, वन, लता और गंगा का जल। प्रकृति की छटा को भारत माता के वस्त्र और गहनों के रूप में चित्रित किया गया है। हाँ, प्रकृति का संरक्षण करना देशप्रेम का काम है, क्योंकि देश की सुंदरता और संसाधन उसकी पहचान और समृद्धि का आधार हैं। यदि हम प्रकृति की रक्षा करेंगे तो हम अपनी धरती और देश को सुरक्षित और सुंदर बनाए रखेंगे।

प्रश्न-अभ्यास

Q. “कनक शस्य कमलधरे!" पंक्ति भारतभूमि की किन-किन विशेषताओं की ओर संकेत कर रही है?

यह पंक्ति भारतभूमि की समृद्धि, कृषि संपन्नता और पवित्रता की ओर संकेत कर रही है। 'कनक' अनाज, 'शस्य' धन और 'कमल' शुद्धता और सौंदर्य का प्रतीक हैं।

प्रश्न-अभ्यास

Q. "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार" पंक्ति में हिमालय को भारत का मुकुट बताया गया है, क्यों?

हिमालय को भारत का मुकुट इसलिए बताया गया है क्योंकि यह विशाल, पवित्र और भव्य पर्वत श्रृंखला भारत की भौगोलिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठा का प्रतीक है। हिमालय की ऊँचाई और उसकी सुंदरता भारत के गौरव और शक्ति को दर्शाती है।

विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
प्रकृति का मानवीकरण	
आलंकारिक प्रयोग	
समस्त पद/सामासिक पद का प्रयोग	
संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयोग	

विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
प्रकृति का मानवीकरण	तरु-तृण-वन-लता वसन, अंचल में खचित सुमन; गंगा ज्योतिर्जल-कण धवल धार हार गले।
आलंकारिक प्रयोग	"लंका पदतल शतदल, गर्जितोर्मि सागर जल धोता शुचि चरण युगल !" (रूपक और उपमा का प्रयोग)
समस्त पद/सामासिक पद का प्रयोग	ध्वनित दिशाएँ उदार, शतमुख शतरव-मुखरे
संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयोग	प्राण प्रणव ओंकार, मुकुट शुभ्र हिम तुषार

प्रश्न-अभ्यास

Q. स्वतंत्रता पूर्व लिखी इस कविता में भारत को ज्ञान, कृषि और संस्कृति के प्रतीक / परिचायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान संदर्भ में यदि आपको भारत को एक नए रूप में प्रस्तुत करने अवसर मिले तो आप भारत की किन विशेषताओं और विविधताओं को सम्मिलित करेंगे?

यदि भारत को आज के संदर्भ में प्रस्तुत करना हो, तो मैं उसमें उसकी तकनीकी प्रगति, विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र की उपलब्धियाँ, विविध भाषाएँ, कला, संगीत और खेल की प्रतिभाएँ, साथ ही सामाजिक समरसता और विभिन्न धर्मों का सौंदर्य शामिल करूँगा। इसके अलावा आधुनिक भारत में युवाओं की ऊर्जा, स्टार्टअप और नवाचार की दिशा भी दिखाई जा सकती है।

प्रश्न-अभ्यास

Q. "शतमुख शतरव-मुखरे!" पंक्ति में भारत के विविध पर्व, उत्सव और रीति-रिवाज किस प्रकार 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को साकार करते हैं?

यह पंक्ति दर्शाती है कि भारत में अनेक पर्व, उत्सव और रीति-रिवाज मनाए जाते हैं, लेकिन सभी का मूल उद्देश्य समान है - आनंद, प्रेम और सांस्कृतिक समरसता। विविधता के बावजूद सभी लोग एक राष्ट्र के रूप मे जुड़े हैं, जो 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को साकार करता है।

प्रश्न-अभ्यास

Q. भारत को सुदृढ़ करने में इसकी प्रकृति, संस्कृति और ज्ञान-परंपरा के महत्व को बताते हुए संक्षिप्त लेख लिखिए।

भारत की प्रकृति, जैसे नदियाँ, पर्वत और वन, देश को जीवन और संसाधन प्रदान करते हैं। संस्कृति और ज्ञान-परंपरा हमें हमारी पहचान और इतिहास से जोड़ती है। यदि हम इन सभी का संरक्षण और संवर्धन करेंगे, तो भारत न केवल आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से मजबूत होगा, बल्कि विश्व में अपनी सांस्कृतिक और वैज्ञानिक प्रतिष्ठा भी बनाए रखेगा। प्रकृति की रक्षा, शिक्षा और संस्कृति का संरक्षण देश को सुदृढ़ और प्रगतिशील बनाता है।

प्रश्न-अभ्यास

Q. कविता में गंगा को भारत के स्वच्छ और श्वेत हार एवं हिमालय को मुकुट के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। वर्तमान संदर्भ में बताइए कि बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन ने हमारी नदियों और हिमालय को किस प्रकार प्रभावित किया है?

वर्तमान में बढ़ते प्रदूषण के कारण गंगा और अन्य नदियाँ गंदी और अपवित्र हो रही हैं, जिससे पानी की गुणवत्ता और जीवन पर बुरा असर पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन से हिमालय की बर्फ पिघल रही है, ग्लेशियर घट रहे हैं और प्राकृतिक आपदाओं का खतरा बढ़ रहा है। यह हमारी पारंपरिक सुंदरता और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।

Thank you Cuties